Dr. Shyam Shankar
Associate Professor
Deptt. of Political Science
Raja Singh College, Siwan

For B A Hons Part - I

राज्य का विकास - आदि राज्य एवं प्राच्य या पूर्वी साम्राज्य

राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे यही स्वीकृत किया जाता है कि राज्य ऐतिहासिक विकास का परिणाम है। राज्य का उदय शुरूआती दौर मे अपरिष्कृत रूप मे अर्थात कबीले या सामान्य रूप मे हुआ और धीरे धीरे मानव समाज के विकास के साथ इसके रूप भी बदलते गये है। राज्य के विकास का विश्लेषण की दिशा में इसमें सबसे पहले अर्थात आदि राज्य फिर प्राच्य या पूर्वी साम्राज्य, यूनानी नगर राज्य, रोमन साम्राज्य, सामन्तवादी राज्य, आधुनिक राष्ट्र राज्य तथा राज्य के भावी विकास अर्थात विश्व संघ जैसी अवस्थाओ पर चर्चा करना होगा।

1. आदि राज्य - The Tribal State — सबसे पहली सामाजिक इकाई परिवार है तथा सबसे पहली राजनीतिक इकाई को हम कबीला कह सकते है। सरकार अथवा राज्य का सबसे पहले लक्षण कबीले मे ही दिखाई पड़ता है। क्योंकि राज्य का प्रमुख लक्षण यह है कि कुछ व्यक्ति या एक व्यक्ति आज्ञा देते है और शेष व्यक्ति उसकी आज्ञाओ का पालन करते है। प्राचीन काल मे कबीले का मुखिया भी आज्ञा देता था कबीले के शेष लोग उसका पालन करते थे। जो उसके आदेश का उल्लंघन करते थे उन्हे दण्डित भी किया जाता था। हालांकि इन कबीले मे आधुनिक राज्य की तुलना मे जनसंख्या और भू-भाग कम होता था, लेकिन शक्ति और संगठन के तत्व इसमे मौजूद थे। इन कबीलों मे कोई लिखित कानून नही होते थे बल्कि उनके रीति-रिवाज ही कानून समझे जाते थे। इन कबीलों मे आपस युद्ध होता रहता था तथा एक कबीले का सरदार दूसरे कबीले को हराकर वहां का राजा बन जाता था। वहां के निवासी उसके प्रजा हो जाते। इसी प्रकार से छोटे छोटे अनेक राज्यों का उदय होता गया। —

Scanned with CamScanner

2. प्राच्य या पूर्वी साम्राज्य (The Oriental Empire)

धीरे धीरे ऐसे कबीले उन स्थानों पर स्थायी रूप से बसने लगे जहाँ वे अपना जीवन आसानी से गुजार सकते थे। उपजाऊ मिट्टी, जलवायु, पानी, प्राकृतिक संसाधन वाले क्षेत्रों मे उनका व्यवस्थित जीवन यापन होने लगा। नील, यूफ्रेटिस, सिन्धु, गंगा, यलो, यांग्त्सी आदि नदियों की घाटियों मे मिस्र, बेबीलोन, सीरिया, भारत तथा चीन आदि राज्यों की स्थापना की स्थापना हुई।

इन ~~क्षेत्रों~~ क्षेत्रों मे जनसंख्या के विस्तार के साथ उनके लिए अधिक भूमि की आवश्यकता हुई जिसने युद्धों को जन्म दिया ऐसे युद्ध भी राज्यों की स्थापना का कारण बना। युद्ध के कारण दासो की संख्या बढ़ी, व्यापार एवं वाणिज्य का विकास हुआ। कर्मों के आधार पर जातियाँ विकसित हुई। बढ़ते हुए धन, समाज के रक्षा की भावना आगे चल मे युद्ध और शक्ति प्राप्त करने की इच्छा ने ऐसे कुशल रणनीतिक वर्ग को जन्म दिया और इन्ही मे से सम्राट की उत्पत्ति हुई। अस्थायी सेना की जगह स्थायी सैनिक रखे जाने लगे। पुजारी, राजनीतिज्ञ और सैनिक वर्ग एक दूसरे के पूरक बनकर समाज को व्यवस्थित करने लगे। इसमे महत्वाकांक्षी नेताओं को आगे बढ़ने का मौका मिला और धीरे धीरे राज्यों का विकास हुआ। इनमे से कुछ शक्तिशाली राज्यों ने आस पास के कमजोर राज्यों को अपने मे मिलाकर साम्राज्य की स्थापना की। इसी प्रकार सुमेरियन, असीरियन, भारत, मिस्र और चीन का साम्राज्य बना। फारस के साम्राज्य को छोड़कर अन्य साम्राज्यों के क्षेत्रों का प्रबन्ध और संगठन कमजोर था। सत्तारूढ़ राजा के कमजोर होते ही उनमे सत्ता का संघर्ष शुरू हो जाता था। इनमे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राजनीतिक प्रगति की गुंजाइश नही थी। पाश्चात्य लेखकों ने ऐसे साम्राज्यों को राजनीतिक संगठन की दृष्टि से अत्यन्त ही अपूर्ण बताया।

Scanned with CamScanner